BELIEVERS EASTERN CHURCH
World Church Headquarters, St Thomas Community
Thiruvalla - 689 103, Kerala, India

चरवाहे का पत्र

मार्च–मई 2026

मेरे प्रिय चरवाहों और पवित्रा कलीसिया के सभी विश्वासियों,

एकमात्र परमेश्वर – पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा – के नाम में, अब और सदा-सर्वदा। ✠ आमीन।

मुझे हमारे आध्यात्मिक पिता अनुस्मरणीय मेट्रोपॉलिटन अथनेसियस योहान प्रथम की अक्सर कही हुई बात याद आती है। वे हमसे कहा करते थे, ''हर समय कलीसिया के बारे में सोचो।'' उनका आशय यह था कि इस पृथ्वी पर हम जिस एकमात्र स्थायी वास्तविकता का निर्माण कर सकते हैं, वह कलीसिया है।

प्रिय बच्चों, आप ही कलीसिया हैं — मसीह का जीवित शरीर। यह याद रखें कि जिस स्थानीय पैरिश कलीसिया से आप जुड़े हैं, वह केवल एक संस्था या संगठन नहीं है। वह एक पवित्र प्रभु-भोज केंद्रित संगति है, जो पवित्र आत्मा में एक होकर बिशप और याजक के चारों और एकत्रित होती है, और पवित्रशास्त्र तथा पवित्र मर्मों (अनुष्ठानों) से पोषित होती है। इसी पैरिश में हम निरंतर मसीह से भेंट करते, परमेश्वर के स्वभाव में बढ़ते, और वचन तथा कर्म में सुसमाचार को सक्रिय रूप से जीने के लिए प्रेरित होते रहते हैं।

इसी कारण 2026 में हमारी कलीसिया के लिए हमारा दर्शन है: 'पैरिश का निर्माण: विश्वास, जीवन और सेवा।' अब मैं संक्षेप में इस दर्शन के इन तीन पहलुओं को समझाना चाहता हूँ और यह भी बताना चाहता हूँ कि हम इन्हें अपनी पैरिश के सामूहिक जीवन में व्यावहारिक रूप से कैसे लागू कर सकते हैं।

1. विश्वास

कल्पना कीजिए कि स्थानीय पैरिश कलीसिया एक बड़े वृक्ष के समान है। विश्वास उस वृक्ष की जड़ के समान है, जो वृक्ष को दृढ़ता से थामे रखती है और उसे पोषण देती है। उसी प्रकार पवित्र विश्वास, पवित्र कलीसिया और हमारे मसीही जीवन की नींव है।

a) पवित्र विश्वास किसी व्यक्ति की निजी राय नहीं है। परन्तु यह वह विश्वास है जो हमें प्रेरितों द्वारा सौंपा गया, प्रारम्भिक कलीसिया के पिताओं द्वारा पुष्टि किया गया, और पवित्र कलीसिया के जीवन के माध्यम से सुरक्षित रखा गया है। यह सुसमाचार और यह विश्वास तभी प्रामाणिक बने रहते हैं जब उन्हें उसी प्रकार धारण किया जाए जैसे पवित्र प्रेरितों ने हमें सौंपा था। जैसा कि प्रेरित पौलुस गलातियों 1:8 में लिखते हैं: ''परन्तु यदि हम, या स्वर्ग से कोई दूत भी उस सुसमाचार को छोड़ जो हम ने तुम को सुनाया है, कोई और सुसमाचार तुम्हें सुनाए, तो शापित हो।'' यह हमें उस पवित्र विश्वास की गंभीरता और गहराई की याद दिलाता है जिसके अनुसार हमें जीना और उसे विश्वासयोग्यता से सुरक्षित रखना है।

b) 1 तीमुथियुस 3:15-16 में, पवित्र कलीसिया को ''सत्य का खंभा और नींव'' कहा गया है। इस अंश में, कलीसिया को परमेश्वर का घराना बताया गया है, जिसे सुसमाचार के सत्य को थामे रखने, उसकी

रक्षा करने और उसे सहारा देने की जिम्मेदारी सौंपी गई है। अगले पद में ''भक्ति का भेद'' — अर्थात देह में प्रकट हुए यीशु मसीह — को उस सत्य के रूप में बताया गया है जिसे पवित्र कलीसिया घोषित और सुरक्षित रखती है। यह दर्शाता है कि कलीसिया का दायित्व यह है कि मसीही विश्वास को उसकी शुद्धता में, बिना मिलावट और बिना विकृति के सुरक्षित रखे।

c) संत पौलुस 2 तीमुथियुस 1:5 में संत तीमुथियुस को उस ''निष्कपट विश्वास'' की याद दिलाते हैं जो पहले उसकी नानी लोइस और उसकी माता यूनीके में था। उसी प्रकार हमें भी यह सुनिश्चित करना चाहिए कि यह पवित्र विश्वास हमारे घरों में जीवित रहे और विश्वासयोग्यता के साथ अगली पीढ़ी को सौंपा जाए।

2. जीवन

जीवन उस वृक्ष के सामान है — उसका तना, शाखाएँ और पत्तियाँ हो सबको दिखाई देती हैं। उसी प्रकार एक पैरिश का जीवन इस बात से प्रकट होता है कि हम प्रतिदिन अपने विश्वास को कैसे जीते हैं, जिसमें संसार में हमारे जीवन के आध्यात्मिक और सांसारिक दोनों पहलू शामिल होते हैं।

a) इस जीवन के केन्द्र में विश्वासयोग्यता से दिव्य-आराधना विधि की है। एक पैरिश समुदाय के रूप में हम सप्ताह दर सप्ताह पवित्र वेदी के चारों ओर एकत्रित होते हैं और यीशु मसीह से सामर्थ और पोषण प्राप्त करते हैं। हम कलीसिया के लिटर्जिकल कैलेंडर का पालन करते हैं और उपवासों एवं पर्वों को भक्ति और एकता के साथ मनाते हैं। इस प्रकार, पवित्र अनुष्ठान पैरिश जीवन में गहराई से समाहित हो जाते हैं और पवित्र त्रिएक परमेश्वर हमारी आराधना का केन्द्र बनता हैं।

b) यह जीवन हमारे घरों में भी जीया जाना चाहिए। हमारे परिवार छोटी-छोटी कलीसियाएं बनें, जहाँ प्रार्थना दैनिक जीवन का स्वाभाविक हिस्सा हो। हमें अपने घरों में नियमित प्रार्थना की व्यवस्था स्थापित करनी चाहिए — जैसे, प्रात:कालीन और सांध्यकालीन प्रार्थनाएँ, पवित्रशास्त्र का पाठ, और परमेश्वर के सम्मुख शांत मनन के क्षण।

c) हमारा मसीही जीवन उन समूहों में भी दिखाई देना चाहिए जहाँ हम रहते हैं — जिन स्कूलों और कॉलेजों में हम पढ़ते हैं, जिन कार्यस्थलों पर, जिन शब्दों को हम बोलते हैं, जिन संबंधों को हम बनाए रखते हैं, और जिस प्रकार हम अपने आचरण को संचालित करते हैं। इन सभी बातों में हमारा जीवन यीशु मसीह को प्रतिबिंबित करना चाहिए, क्योंकि कई बार हमारा जीवन हमारे शब्दों से भी अधिक प्रभावशाली ढंग से बोलता है।

3. सेवा

सेवा उस वृक्ष के फल के समान है; यह हमारे विश्वास और आध्यात्मिक जीवन का दृश्य परिणाम है। एक मसीही वही है जो अपने विश्वास को कर्मों के द्वारा जीता है।

a) दिव्य-आराधना विधि के अंत में हमें आशीष दिया जाता है और वचन और कर्म के द्वारा परमेश्वर की सेवा करने के लिए संसार में भेजा जाता है। यही हमारी बुलाहट और हमारा कर्तव्य है — अपने पड़ोसियों, अपने समूहों और अपने आसपास के समाज तक पहुँचना। प्रारम्भिक कलीसिया के पितामहों ने इसे अक्सर ''लिटर्जी उपरांत लिटर्जी'' के रूप में वर्णित किया है।

b) परमेश्वर की सन्तान होने के नाते हमें परोपकार और करुणा के कार्यों के द्वारा सुसमाचार को सक्रिय रूप से जीने के लिए बुलाया गया है, जैसे कि:

परमेश्वर की सृष्टि के जिम्मेदार संरक्षक के रूप में गरीबों और विधवाओं की देखभाल करना, वंचित बच्चों को शिक्षा देना और उनकी मदद करना, जरूरतमंद लोगों के प्रति दया और करुणा दिखाना।

महा उपवास (ग्रेट लेंट) के इस समय में, और इसके पश्चात् भी, 'पैरिश का निर्माण: विश्वास, जीवन और सेवा' का यह दर्शन हमें आगे बढ़ने के लिए एक स्पष्ट मार्ग प्रदान करे। और यह दर्शन तभी फल लाएगा जब हम सभी — बिशपों, याजकों और विश्वासीगण — मिलकर इसे समर्पण और धैर्य के साथ अपनाएँगे।

शीघ्र ही हम पवित्र थिओटोकोस को उद्घघोषणा पर्व मनाएँगे, जिसके बाद खजूर रविवार आएगा। इसके पश्चात हम वर्ष के सबसे पवित्र समय — पवित्र सप्ताह — में प्रवेश करेंगे, जिसमें हम अपने प्रभु यीशु मसीह के साथ उसके दु:खभोग की यात्रा करते हैं और जो अंतत: उसके महिमामय पुनरुत्थान पास्का (ईस्टर) में पूर्ण होती है।

मेरे प्रिय बच्चों, इन उपवास के पवित्र दिनों में, मैं आप में से प्रत्येक को अपनी प्रार्थनाओं में स्मरण करता हूँ। मैं इस लेंट की यात्रा में आपके साथ चलता हूँ और एक आध्यात्मिक पिता के रूप में आपको प्रोत्साहित करता हूँ कि जो कुछ मैंने साझा किया है उसे अपने जीवन में सक्रिय रूप से अपनाएँ। कृपया परमेश्वर के सिंहासन के सामने अपनी नियमित प्रार्थनाओं में इस दुर्बल और पापी सेवक को भी स्मरण रखें, ताकि मुझे उसकी दया और अनुग्रह प्राप्त हो।

पवित्र त्रिएक परमेश्वर — पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा — आपको उसकी इच्छा को समझने की बुद्धि, उसकी आज्ञाओं का पालन करने की सामर्थ, और उसकी दया को प्रतिबिंबित करने का प्रेम प्रदान करें। और सभी संतों तथा पवित्र थिओटोकोस के मध्यस्थताएं परमेश्वर के सिंहासन के सम्मुख हमारे लिए सुरक्षा हो, अब और सदा सर्वदा। ✠ आमीन।

पितृत्वपूर्ण प्रेम और प्रार्थनाओं के साथ,

मोरान मोर सैमुअल थियोफिलस
मेट्रोपॉलिटन

तिथि : 13 मार्च 2026
स्थान : विश्व चर्च मुख्यालय

निर्देश: कृपया यह सुनिश्चित करें कि यह सभी क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवादित है और विश्वासियों के प्रोत्साहन के लिए सभी स्थानीय कलीसियाओं में पढ़ा जाए।